नारायण सिंह राणा

घरेलू स्तर पर वर्षा के जल का संरक्षण

वर्षा के जल का संरक्षण घर के आसपास सरलता से किया जा सकता है। इसके लिए मकान की छत से कुछ निचले स्तर पर सीमेंट की टंकी या दीवार बनाकर पॉलीथीन की परत दीवार के सहारे टंकी के ऊपर व नीचे बिछाई जा सकती है। पहाड़ी क्षेत्रों की जमीन का स्तर ऊँचा-नीचा होने के कारण जमीन के अन्दर भी पॉलीथीन युक्त टंकी लगाई जा सकती है। इस टंकी को मकान की छत से एक पाइप के द्वारा जोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार दो तीन टंकियाँ बनाई जा सकती हैं तथा इनको एक-दूसरे से जोड़ सकते हैं।

जल संरक्षण का अर्थ जल की बरबादी तथा प्रदूषण को रोकने से है। विश्व में जल की कमी बढ़ती जा रही है। पृथ्वी पर उपलब्ध 2/3 भाग जल क्षेत्र में 97% समुद्र का खारा जल है, जो पीने योग्य नहीं होता है। पृथ्वी पर 3% जल पीने योग्य है। उसमें से 75% जल हिमखण्डों के रूप में और 14% भूमिगत जल के रूप में भूमि की सतह से, 2,500 से 12,500 फुट की गहराई पर है, जिसका दोहन सम्भव नहीं है। कुल उपलब्ध जल का 11% भूजल, पृथ्वी की सतह से 2,500 फुट तक की गहराई पर उपलब्ध है। जल वैज्ञानिकों के अनुसार भूमि की सतह पर मात्र 0.97% जल ही घरेलू उपयोग, सिंचाई और उद्योगों आदि के लिए उपलब्ध है।

वर्षा का जल जैविक रूप से शुद्ध, प्रकृति से मृदु तथा जैव पदार्थों से मुक्त होता है। वर्षा के जल का एकत्रीकरण एक प्रभावी तकनीक है जिससे जल का संरक्षण किया जा सकता है। वर्षा का जल जो छत के ऊपर गिरता है उसे टैंकों या भूमिगत उपायों की सहायता से उपयुक्त दिशा प्रदान की जाती है ताकि भविष्य में इसका उपयोग किया जा सके।

वास्तव में जल ही जीवन है। जल के सम्बंध में कुछ महत्वपूर्ण विचार इस प्रकार हैं।

1. रहिमन पानी राखिये,
   बिन पानी सब सून।
   पानी गए न ऊबरे,
   मोती, मानुष, चून।।
2. जल इंसान, जीव और फसल के लिए आवश्यक है, इसकी सुरक्षा करें और परस्पर वितरित कर उपयोग में लें।
3. जल है जीवन, जल है धन, जान सा हो जल संरक्षण-कुरान।
4. गंगेश्च यमुनेचैव, गोदावरी, सरस्वती।
   नर्मदे सिन्धु कावेरी जलस्मिन सन्निधिम् करुः।।
5. देवी पुराण में कहा गया है कि जो लोग जल संचयन के लिए तालाब, जलाशय, कुओं आदि का निर्माण कराते हैं वे अथाह पुण्य के भागी होते हैं।
6. जल की एक-एक बूंद की कीमत आप की एक एक सांस की कीमत के बराबर है इसे बचाएं व बनाए रखें।
7. जल स्रोत को बचाइये ये आपको जीवन दान देंगे।
8. जल संचय, जीवन संचय।
9. भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी बाजपेयी जी के शब्दों में:- "catch the catchment", जल को संचयित करो।
10. जल स्तुति पंक्तियाँ-
    जल को नहीं व्यर्थ करे कोई,
    जल संरक्षण धर्म बने।
    जल की महिमा समझना ही,
    मानव का सुंदर कर्म बने।।
11. जल संरक्षण कीजिए, जल जीवन सार,
    जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार।

घर के आंगन में जल संरक्षण एवं उपयोग

वर्षा के जल का संरक्षण घर के आसपास सरलता से किया जा सकता है। इसके लिए मकान की छत से कुछ निचले स्तर पर सीमेंट की टंकी या दीवार बनाकर पॉलीथीन की परत दीवार के सहारे टंकी के ऊपर व नीचे बिछाई जा सकती है। पहाड़ी क्षेत्रों की जमीन का स्तर ऊँचा-नीचा होने के कारण जमीन के अन्दर भी पॉलीथीन युक्त टंकी लगाई जा सकती है। इस टंकी को मकान की छत से एक पाइप के द्वारा जोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार दो तीन टंकियाँ बनाई जा सकती हैं तथा इनको

वर्षा जल संग्रहण तकनीक

वर्षा का जल जैविक रूप से शुद्ध, प्रकृति से मृदु तथा जैव पदार्थों से मुक्त होता है। वर्षा के जल का एकत्रीकरण एक प्रभावी तकनीक है जिससे जल का संरक्षण किया जा सकता है। वर्षा का जल जो छत के ऊपर गिरता है उसे टैंकों या भूमिगत उपायों की सहायता से उपयुक्त दिशा प्रदान की जाती है ताकि भविष्य में इसका उपयोग किया जा सके।

एक-दूसरे से जोड़ सकते हैं।

वर्षा जल का उपयोगः वर्षा जल का उपयोग रसोईघर, बागवानी, बर्तन धोने, घर की सफाई, नया घर बनवाने, घर की मरम्मत, पशु नहलाने, मत्स्य पालन, कपड़े धोने तथा इसका शुद्धिकरण करके पीने आदि उपयोगों में किया जा सकता है। इससे घर-आंगन स्वच्छ रहेगा तथा गाँव के आसपास की भूमि का कटाव भी रुकेगा। जल को शुद्ध एवं ठण्डा रखने के लिए हम कृत्रिम कुएं भी बना सकते हैं।

मकान की छत से प्राप्त वर्षा जल को हम दो प्रकार से संचयित कर सकते हैं।

1. सामान्य टंकी बनाकर या प्लास्टिक की टंकी का उपयोग करकेः- इस प्रकार की टंकी सीमेंट या पॉलीथिन के माध्यम से तैयार की जा सकती है या बाजार में उपलब्ध प्लास्टिक की टंकी का उपयोग वर्षा जल के संग्रहण में किया जा सकता है। इस टंकी के जल का उपयोग रसोईघर, बागवानी, कपड़े व बर्तन धोने, पशुओं को नहलाने, मत्स्य पालन आदि जैसे विभिन्न कार्यों में किया जा सकता है।

2. कृत्रिम कुओं में वर्षा जल का संरक्षणः वर्षा जल के संरक्षण हेतु एक आधुनिक कृत्रिम कुआं बनाया जा सकता है। इसके लिए हम जमीन के नीचे 15 से 20 फीट गहरा एवं 10-15 फीट चौड़ा गड्ढा घर के आसपास बना सकते हैं। इसकी दीवार सीमेंट या मजबूत पत्थरों को पॉलीथीन से ढककर बनाई जा सकती है। इस गड्ढे को सीमेंट के ढक्कन से ढका जा सकता है तथा इसके ऊपर मिट्टी डालकर जल को ठण्डा रखा जा सकता है। कुएं के जल की निकासी हैण्ड पम्प या विद्युत पम्प के द्वारा की जा सकती है। इस कुएं में जल संचयन से पूर्व इस वर्षा जल का शुद्धिकरण फिल्टर, पत्थर, कंकड़, बालू, कोयला, बजरी के मिश्रण से किया जाता है। जल धीरे-धीरे कुएं में पहुंच जाता है। इस जल का उपयोग हम विभिन्न कार्यों में कर सकते हैं।

3. गाँव में वर्षा जल का संग्रहणः गाँव की छत के जल का संचयन विभिन्न पाइपों के माध्यम से गाँव के दूर किनारे पर निर्मित विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े तालाब/कृत्रिम कुँओं में किया जा सकता है। तालाब बनाते समय तलहटी पर पॉलीथीन बिछा देना चाहिए। जिससे जमीन से इस जल का अवशोषण न हो सके तथा जल काफी समय तक सुरक्षित रह सके। इस जल का उपयोग गाँव की सफाई, किचन गार्डन, पशु नहलाने, बाग-बगीचों आदि कार्यों में किया जा सकता है। यह जल वन्य जन्तुओं के पीने के काम भी आ सकता है। इस प्रकार की विधि से वर्षा के जल के एकत्रीकरण से गाँव की साफ-सफाई व जमीन का कटान रुकेगा तथा गाँव का विकास होगा।

अतः हमें वर्षा के जल का विभिन्न स्तरों पर संरक्षण करना चाहिए ताकि भविष्य में हम जल संकट से बच सकें। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाला विश्व युद्ध जल के बारे में होगा। आज मनुष्य की वैज्ञानिक दौड़ के कारण हमारे हिमनद धीरे-धीरे सिकुड़ते जा रहे हैं। जिसके कारण नदियों का जलस्तर घट रहा है। नदियों से जो जल हमें मिल रहा है, वह प्रदूषित हो चुका है। पृथ्वी के जल चक्र को संतुलित रखने के लिए जल को संरक्षित करना आवश्यक है।

वर्षा जल संग्रहण

संपर्क करें:
नारायण सिंह राणा,
बालावाला, निकट डोभाल निवास,
रायपुर, गूलरघाटी रोड़,
उप. पो.ओ.: बालावाला- 248 019
मो. नं. 7895880319, 9458951973